Hazrat Abdullah Shah Ghazi

ABDULLAH SHAH GHAZI MAZAAR

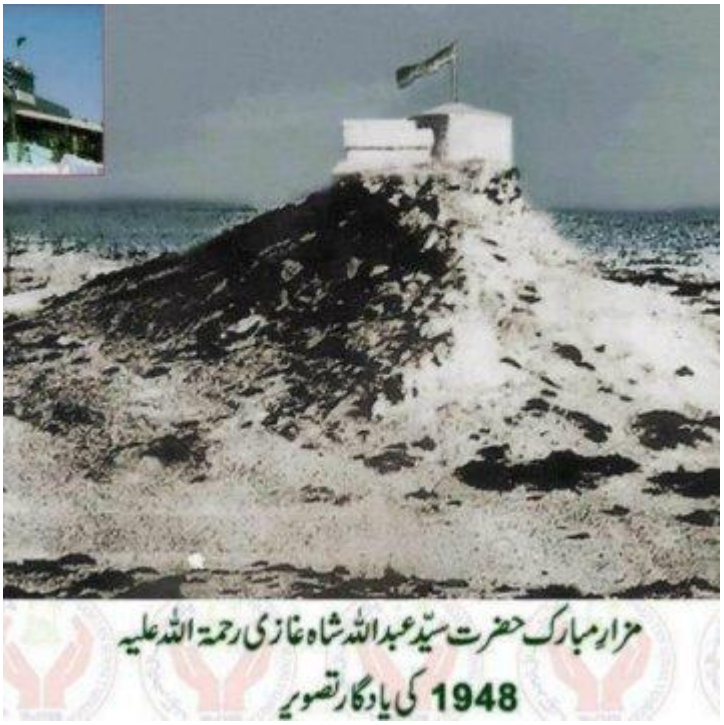

The shrine of Abdullah Shah Ghazi in Karachi, Pakistan. Abdullah Shah Ghazi (Arabic: عبد الله شاه غازي) was an eighth century Muslimmystic whose shrine is located in the Clifton neighbourhood of Karachi, Pakistan.

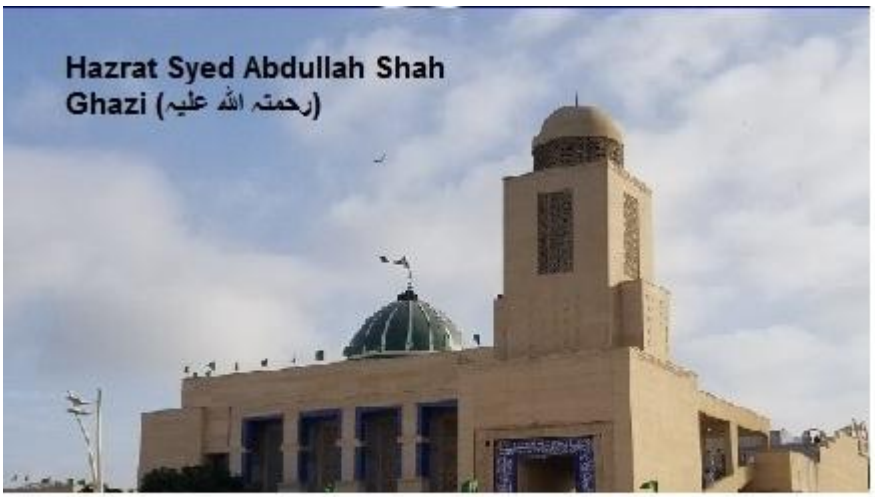

Urs of Hazrat Abdullah Shah Ghazi (رحمتہ اللہ علیہ)
20,21,22 Zil Hajj

हज़रतसैय्यदनाअब्दुल्लाहअलअशतरउर्फ़ (अब्दुल्लाहशाहग़ाज़ी) बिनसैय्यदनामोहम्मदज़िउन्नफ़्सअज़ज़कियारहमतउल्लाहअलैह–पैदाइशऔरनाम– सन् (120) हिजरी मे हज़रत सैय्यदना अबु मोहम्मद अब्दुल्लाह अल अशतर रहमतउल्लाह अलैह ने हज़रत सैय्यदना मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु के यहाँ मदीना मुनव्वरा मे आँखे खोली! आपका नाम अब्दुल्लाह कुन्नियत अबु मोहम्मद और लक़ब अल अशतर पड़ा! तारीखों से पता चलता है कि आपकी तालीम व तरबियत आपके वालिद साहब हज़रत नफ़्से ज़किया और दादा हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु के ज़ेरेसाया मदीना मुनव्वरा मे ही हुई और कुछ मुअर्रिख़ ये भी बयान करते हैं कि आपकी परवरिश हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़िअल्लाह अन्हु के आग़ोशे रहमत मे हुई है! आप इल्मे हदीस पर उबूर रखते थे और मोहद्दिस थे!

नसबमुबारक– हज़रत अबु मोहम्मद अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी बिन हज़रत इमाम मोहम्मद नफ़्से ज़किया बिन हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ बिन हज़रत हसन मुसन्ना बिन हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम बिन हज़रत जनाब सैय्यदा फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा बिन्त हुज़ूर पुर नूर जनाब मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम! जबकि आपकी वालिदा की तरफ़ से आपका शज्रह नसब इस तरह है- हज़रत अबु मोहम्मद अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी बिन सैय्यदा सलमह बीबी बिन्त हज़रत मोहम्मद रज़िअल्लाह अन्हु बिन हज़रत हसन मुसन्ना अलैहिस्सलाम बिन हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम बिन हज़रत जनाब सैय्यदा फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा बिन्त हुज़ूर पुर नूर जनाब मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम!

आपकीसिंधआमद– आपके वालिद मोहतरम जनाब सैय्यदना मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़की रज़िअल्लाह तआला अंन्हु ने (138) हिजरी मे जब अलवी ख़िलाफ़त की तहरीक शुरु की तो आपको इसकी तरग़ीब और इस्लाम की तब्लीग़ के लिये सिन्ध के तरफ़ रवाना किया! हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह पहले मदीना से बसरह तशरीफ़ ले गए और कुछ दिन अपने चचा सैय्यदना इब्राहीम के पास बसरह मे ठहरे, फिर वहाँ से होते हुए समंदर का दुशवार तरीन सफ़र तय करते हुए सिंध तशरीफ़ लाए! सरज़मीने सिंध भी इस्लाम के नाम पर क़ाबिज़ अब्बासी हुक्मरानों के ज़ेरे तसल्लुत थी! सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी के आमद के वक़्त ख़लीफ़ा मंसूर अब्बासी के तरफ़ से अम्र बिन हफ़्स सिंध के गवर्नर थे, लिहाज़ा आपके लिये यहाँ भी तबलीग़ के ज़रिये दीन-ए-हक़ पहुचाना कोई आसान बात न थी और वो अब्बासी दौर-ए-हुकूमत मे इन्तेहाई मतलूब थे! लिहाज़ा हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह पैग़ामे करबला को मोअस्सर तरीक़े से पहुँचाने के लिये बतौर घोड़े के ताजिर सिंध मे दाख़िल हुए (वो घोड़े आपने अपने कमोबेश बीस मुरीदों से ख़रीदे थे) और गवर्नर सिंध अम्र बिन हफ़्स से मुलाक़ात किया!

अम्र बिन हफ्स जो मोहब्बत अहले बैत दिल मे रखते थे, ख़ानदाने अहले बैत की ख़िदमत को बाइसे अज्र समझते थे, उन्होंने आपको तिजारत के सिलसिले मे तमाम सहूलत मुहैया कराई! हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह ने तिजारत के शक्ल मे अपना अस्ल काम शुरू कर दिया और पैग़ामे हुसैनी को पहुँचाने मे दिन रात कोशा रहे जिससे सिंध मे बहुत से मोहिब्बाने अहले बैत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पैरोकारो मे इज़ाफ़ा होता चला गया!

गवर्नरेसिंधकीताज़ीमऔरआपसेबैअत– गवर्नरे सिंध अम्र बिन हफ़्स को जब इस बात की ख़बर हुई तो वो इस काविश मे आपके साथ हो गए और आपके हाथो पर बैअत कर लिया, जिससे दिन ब दिन मोहिब्बाने अहले बैत मे इज़ाफ़ा होता चला गया! गवर्नरे सिंध आपका हद दर्जे एहतिराम बजा लाता और आपसे मोहब्बत का मुज़ाहिरा पेश करता रहता था! इसी दौरान आप रहमतउल्लाह अलैह को ये ख़बर मिली कि आपके वालिदे मोहतरम जनाब इमाम नफ्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु को 145 हिजरी मे मदीना मे और आपके चचा हज़रत इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हु को बसरह मे सदा-ए-हक़ बुलन्द करने के जुर्म मे शहीद कर दिया गया! (जिसका तफ़्सीली ज़िक्र पहले हो चुका है)

अबुजाफ़रमंसूरकाआपकेगिरफ़्तारीकाहुक्मऔरआपकासाहिलीहुकूमतपरहिजरतकरना – हज़रत अब्दुल्लाह शाह गाज़ी रहमतउल्लाह अलैह के वालिद साहब और चचा के शहादत के बाद अब्बासी ख़लाफ़त के मरकज़ (ख़लीफ़ा मंसूर) से आपकी गिरफ्तारी का अहकाम सादिर हुआ मगर आपके हिस्से मे भी मैदाने जंग मे शहादत लिखी जा चुकी थी लिहाज़ा आपकी गिरफ़्तरी तो अमल मे नही आ सकी! हज़रत अम्र बिन हफ़्स (गवर्नरे सिंध) आपकी गिरफ़्तारी के मामले को मुसलसल टालते रहे, इनका ख़्याल था कि इस तरह कुछ वक़्त गुज़र जाएगा और ख़लीफा मंसूर आपकी गिरफ्तारी को भूल जाएगा मगर मंसूर के दिल मे एक लम्हा के लिये हज़रत अब्दुल्लाह शाह गाज़ी रहमतउल्लाह अलैह कि गिरफ़्तारी का ख़्याल मानिंद नही पड़ा और वो मुसलसल गवर्नरे सिंध के पास आपके गिरफ़्तरी का अहकाम भेजता रहा!

हज़रत अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह की हिफ़ाज़त के लिये अम्र बिन हफ़्स ने अपने दानिस्त मे आपको साहिली हुकूमत मे पहुँचा दिया, वहाँ का राजा जो हिंदु था मगर नबी पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बहुत ज़्यादा अक़ीदत रखता था इसी सबब उसने हज़रत अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह को शहज़ादो के तरह रखा और वो आपकी बहुत इज़्ज़त और ऐहतिराम बजा लाता था!

हज़रत अम्र बिन हफ़्स अपने दानिस्त मे हज़रत अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह को एक महफ़ूज़ मुक़ाम पर पहुँचा चुके थे मगर मंसूर को किसी न किसी ज़रिये से इस बात की ख़बर लग गयी और उसने अम्र बिन हफ़्स से मुतालबा कर दिया कि अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह का सर या ख़ुद अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह को बग़दाद भेज दो!

हज़रतअम्रबिनहफ़्सकागवर्नरीसेमाज़ूली– हज़रत अम्र बिन हफ़्स का मुसलसल अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह के गिरफ़्तारी को टालने के वजह से मंसूर ने बिल आख़िर अम्र बिन हफ़्स को सिंध की गवर्नरी से माज़ूल करके अफ़रीक़ा भेज दिया और आपके जगह 146 हिजरी मे हिश्शाम को सिंध का गवर्नर बना दिया! ख़लीफ़ा मंसूर ने हिश्शाम को भी वही ताक़ीद की कि अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह को ज़िन्दा या मुर्दा फ़ौरन पेश किया जाए अगर सिंध का कोई राजा इन्कार करे तो उसपर हमला करके उसके इलाक़े पर कब्ज़ा कर लिया जाए! दूसरी तरफ़ सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह राजा की पनाह मे मुकम्मल आज़ादी के साथ अपना काम करते रहे ज़ैदिया फ़िर्क़े के लोग भी सैय्यद के ताबे थे उन्होंने भी यहीं पनाह ली! 'ड़ा. मिर्ज़ा इमाम अली बेग' अपनी किताब 'सिंध जी अज़ादारी' मे लिखते है कि हिश्शाम जब सिंध मे दाख़िल हुआ तो उसने हिंदु राजा को तलब करके अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह के हवाल्गी का मुतालबा किया मगर राजा ने इन्कार कर दिया! हिश्शाम इस सोच मे था कि मंसूर के हुक्म पर किस तरह अमल किया जाए चूंकि हिश्शाम ख़ुद भी ख़ानदाने अहले बैत के मुहिब थे वो इस बात को गवारा नही कर सकते थे कि सैय्यदुन्निसा आलमीन सलामउल्लाह अलैहा की ज़िंदा जावेद निशानी को मौत के हवाले किया जाए काफ़ी सोच और फ़िक्र के बाद सिंध के तमाम शहरों और फ़ौजी हलकों मे मशहूर कर दिया गया कि अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह के बारे मे राजा से मुज़ाकरात जारी है और ख़लीफ़ा मंसूर को भी यही पैग़ाम भेज दिया गया!

सिंधमेइस्लामकीतबलीग़– जैसा की पहले सिन्ध की तारीख़ मे ज़िक्र हो चुका है कि सहाबाकिराम के बाद कोई इस्लाम की तालीम देने या तबलीग़ करने सिंध नही आया था (उमवी और अब्बासी हुक्मरानों के तरफ़ से जो गवर्नर यहाँ नामज़द हुए भी तो उनका काम इस ख़ित्ते पर अपनी मुकम्मल हुकूमत क़ायम करना था) सिवाए हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह के कि जिन्होंने सिंधियो के बंजर दिल के ज़मीन मे सबसे पहले इस्लामी बीज बोया फिर इसकी आबयारी की और मोहब्बत और बुर्दबारी से दिलों को गरमाया और ईमान की ज़रख़ेज़ी से रोशनास कराया इसलिये जो काम इनके ज़िम्मे था वो सिर्फ़ ज़ाहिर से नही होसकता था तारीख़ को रुख़ अता करने वाले ज़ाहिर के साथ बातिन के दुनिया के शहसवार भी होते है जिनकी ज़ाहिर पर कम और बातिन पर ज़्यादा ज़ोरावर तवज्जो होती है!

असबाबग़ैब– दरअस्ल इन हस्तियों के लिये इस दारुल अमल मे जिस जगह का इन्तख़ाब होता है वहाँ इनके लिये असबाब भी मुहैया होते है (गवर्नरे सिंध हज़रत अम्र बिन हफ़्स का मतीअ होना और आप रहमतउल्लाह अलैह की गिरफ़्तारी के ख़लीफ़ा मंसूर के अहकमात टालना, आपको बहिफ़ाज़त दूसरी रियासत मे भेजना ये सब ग़ैबी अआनत थी और आपके अमल की ताएद थी) अगर्चे अब्बासी ख़लीफ़ा मंसूर आप समेत तमाम सादात के क़त्ल के साज़िश मे था इसे आपकी इत्तिला मिलने पर आपको बारहा गिरफ़्तार करने के अहकमात दिये लेकिन क़ुदरत को जो काम आपसे लेने थे इसके लिये पूरा पूरा ऐहतिमाम किया हुआ था! एक ऐसा गवर्नर सिंध मे मौजूद था जो आपकी ताज़ीम और ख़्याल करता था और किसी क़ीमत पर आपको तकलीफ़ न पहुँचाता था बल्कि इन नेक बख़्त गवर्नर यानी अम्र बिन हफ़्स ने आपके हाथ पर बैअत भी करली थी और दरपर्दाह आपकी हिमायत करता था!

सैरो–शिकार– तारीख़ से साबित है कि उस ज़माने मे जब सैय्यदना शाह अब्दुल्लाह अल अशतर सैरो-शिकार के ग़रज़ से कही जाते थे तो शान व शौक़त और कारोफ़र से जाते और साज़ो सामान भी साथ होता था जिससे आपकी शान व शौक़त का इज़हार होता था और ये ग़ालिबन इस लिये भी था कि आपके दरवेशी पर अमारत का पर्दा पड़ा रहे और जो अमानत आपके सुपुर्द थी आपके सीने मे महफ़ूज़ रहे!

शहादत– हिश्शाम का भाई सफ़ीह बिन अमरू जो कि मंसूर का ख़ास ताबेदार था उसने सैय्यदना शाह अब्दुल्लाह अल अशतर पर जो कि अपने कुछ साथियों के साथ थे हमला कर दिया! आप रहमतउल्लाह अलैह ने भागने के बजाए मर्दानावार मुक़ाबला किया! "तारीख़ शियाने अली" मे "सैय्यद अली हुसैन रिज़्वी" लिखते है कि सैय्यदना अब्दुल्लाह अल अशतर रहमतउल्लाह अलैह ने लाशों के अम्बार लगा दिये और इनके साथी हक़ सरफरोशी अदा करते रहे मगर आख़िरकार इनके तमाम साथी एक एक करके लहू लुहान होकर गिर गए और वो भी ज़ख़्मी होकर लाशों के दर्मियान गिर गए और शहीद हो गए, ज़ख़्मी हमराहियों ने आपके जिस्म अनवर को करवट बदल बदल कर अपने कटे-फटे जिस्म के नीचे छुपा दिया ताकि आपका सर मुबारक ख़लीफ़ा मंसूर के पास जाने से बच जाए और वही हुआ सफ़ीह बिन अमरू आपको पहचान भी न सका और ऐसे ही वापस लौट गया!

मज़ारपुरअनवार– आपका मज़ार पुर अनवार क्लिफ़्टन (clifton) कराँची पाकिस्तान मे समुन्द्र के किनारे है और आज तक आपके मज़ार पर अक़ीदतमंदो का रश लगा रहता है और ज़ायरीन पूरे दुनिया से हाज़िरी देते हैं जहां पर समुन्द्र के किनारे होने के बावजूद

आपके करामात के बाइस मीठे पानी का चश्मा जारी और सारी है और जो तक़रीबन बारह सौ अस्सी (1280) साल से मुसलसल जारी और सारी है और आज तक न सूखा और न कम पड़ा!

बिलावलभुट्टोज़रदारीऔरआसिफ़ज़रदारीहज़रतअब्दुल्लाहशाहग़ाज़ीरहमतउल्लाहअलैह कीमज़ारमुबारकपरचादरचढ़ातेहुए!

"इनसेभीफ़ैज़याबहुएंलोगबेशतर

कहतेहैइन्हेंसबअहलेज़माँअब्दुल्लाहअलअशतर"

हुक्मरानी– हुकूमत दो क़िस्म की होती है एक ख़ित्ते पर और दूसरी हुकूमत जो हक़ीक़ी हुकूमत है वो कुलूब पर होती है! हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह अल अशतर रहमतउल्लाह अलैह की हुकूमत दोनो पर क़ायम है सारे दफ़्तरान इन्हीं के यहाँ है जहाँ तमाम ज़ाएरीन कि अरज़ियां मौसूल की जाती है और फिर इनपर अहकमात सादिर होते हैं इसका सबूत इनके यहाँ होने वाले उस जम-ग़फ़ीर से है जो हर आने वाले दिन के साथ बढ़ रहा है जुमेरात को तो आप रहमतउल्लाह अलैह के मज़ार की सीढ़ियां भी चढ़ना दुशवार होती है आम अय्याम मे भी ज़ायरीन का ताँता लगा रहता है! अहले पाकिस्तान इस बात को तस्लीम करते हैं कि सरज़मीने सिंध और सरज़मीने कराँची आप रहमतउल्लाह अलैह के रूहानी फ़ैज़ के बदौलत कई समुन्द्री तूफ़ानों से महफ़ूज़ रहे हैं!

उर्समुबारक– हज़रत अब्दुल्लाह शाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह का विसाल मुबारक 20 ज़िलहिज्ज सन् 153 हिजरी मे हुआ था इसीलिये आपका उर्स मुबारक ज़िलहिज्ज की 20,21,22 तारीख़ को हर साल बहुत शानो शौक़त के साथ मनाया जाता है! (तारीख़ सिंध, तारीख़ इब्ने ख़लदून,मजालिस मोमिनीन,आर्टिकल शहीद फ़ाउण्डेशन आफ़ पाकिस्तान)

औलादमुबारक– तारीख़ी मुताला से पता चलता है कि आपने दो शादियां फ़रमाई थी! पहली शादी तो आपकी मदीना मुनव्वरा मे सैय्यदा क़ुरैशा बीबी से हुई जिनसे आपके फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना मोहम्मद अल असग़र सानी रहमतउल्लाह अलैह पैदा हुएं (जो तमाम सादात-ए-क़ुत्बिया के जद् आला हैं) दूसरी शादी आपकी सिंध के राजा की बेटी से हुई थी जो आपके ख़िदमत मे रहती थीं जिनके बत्न से आपके एक फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना हसन अल अशतर रहमतउल्लाह अलैह पैदा हुएं (लेकिन आपसे नस्ल आगे नही चली)

हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह की नस्ल सिर्फ़ आपके फ़र्ज़न्दे अकबर हज़रत सैय्यदना मोहम्मद अल असग़र सानी रहमतउल्लाह अलैह से दुनिया मे क़ायम है!

Shajra e nasab Aulad Hazrat sarkar Abdullah shah ghazi r.a Ameer kabeer Syed Shah Qutubuddin Muhammad Aquib Qutbi Ashtari Sajjada nasheen Aastana e Aaliya Suherwardia Firdausia kubriwiya Qutbia kabeeriya kada shareef Zila kaushambi u.p India

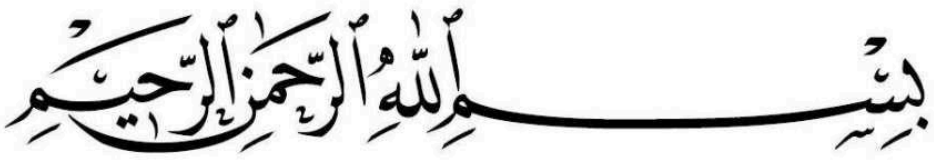

In the Name of Allāh, the Most Gracious, the Most Merciful

(1) Janab Abi Muhammad Abdullah al ashtar urf abdullah shah ghazi sarkar [r.a.] (cliffton Karachi Pakistan.)
(2).Janab Muhammad al Asghar saani [r.a.] (jannatul baqi shareef Arab)
(3).Janab Hasan Al Abdul Jawwad naqeeb e ashraaf e koofa [r.a.] (koofa.Arab)

(4).Janab Abi muhammad abdullah [r.a.] (jannatul baqi shareef Arab)
(5).Janab Syedna Qasim (r.a.) (jannatul baqi shareef Arab)
(6).Janab Syedna Abu jaafar [r.a.] (jannatul baqi shareef Arab)
(7).Janab Syedna Hasan Al Makni bab ul hasan [r.a.] (jannatul baqi shareef Arab)
(8).Janab Syedna Hussain [r.a.] (jannatul baqi shareef Arab)
(9).Janab Syedna Eisa [r.a.] (jannatul baqi shareef Arab)
(10).Janab Syedna Usuf [r.a.] (jannatul baqi shareef Arab)
(11).Janab Syedna Rasheed Al Deen Ahmad Al Madni Al Gaznavi [r.a.] (Baghdad shareef)
(12).Janab Qutub al aqtaab ghausul aalmeen Ameer Kabeer Syed Shah Qutub Al Deen Muhammad Al Madni Al Hasni Al Husaini [r.a.] fateh kada jadd e aala sadaat e Qutbia Fi Hindustan (kada shareef u.p India)
(13).Janab Syedna Ameer Nizam uddin hasan [r.a.] (kada shareef)
(14).Janab Syedna Ameer Ruqhnuddin [r.a.] (kada shareef)
(15).Janab Syedna Ameer Shah Sadruddin [r.a] (kada shareef)
(16).Janab Syedna Shah Qayamuddin [r.a.] (kada shareef)
(17).Janab Syedna Shah Ziyauddin [r.a] (kada shareef)
(18).Janab Syedna Shah Musa [r.a.] (kada shareef)
(19).Janab Syedna shah Syed miya [r.a.] (kada shareef)
(20).Janab Syedna Raje Shah [r.a.] (kada shareef)
(21).Janab Syedna Shah Laad [r.a.] (kada shareef)
(22).Janab Syedna Ameer Shah Muhammad Ismaiel [r.a.] (kurra sadaat fatehpur)
(23).Janab Syedna Ameer Shah Jalaluddin Jalal [r.a.] (kurra sadaat fatehpur)
(24).Janab Syedna Shah Hamza [r.a.] (kurra sadaat fatehpur)
(25).Janab Syedna Shah Abdul Rasool [r.a] (rasoola baad Allahabad)
(26).Janab Syedna Shah Peer muhammad [r.a] (Teele wali masjid Lucknow)
(27).Janab Syedna Muhammad [r.a] (kurra sadaat fatehpur)
(28).Janab Syedna Shah ghulam meer [R.A.] (kurra sadaat)
(29).Janab Syedna Shah Fateh Muhammad [r.a] (kurra sadaat fatehpur)
(30).Janab Syedna Shah Muhammad Hashim [r.a] (kurra sadaat fatehpur)
(31).Janab Syedna Shah Kareem Bakhsh Kurra sadaat Fatehpur)
(32).Janab Syedna Mehdi Bakhsh [r.a] (kurra sadaat fatehpur)
(33).Janab Syedna Shah Abul Hassan Hasni Qutbi shaheed [r.a] [Writer Tareekh Aaine Awadh] (khankah shareef manikpur u.p India)

(34).Janab Syedna Ahmad Zakiuddin Qutbi [r.a.] (khankah shareef manikpur u.p)
(35).Janab Syed Shah Mohiuddin Qutbi (r.a) (khankah shareef manikpur u.p)
(36). Janab Hakeem Syed Shah Shamsuddin Qutbi Quddasirrahul Aali.(Allahabad U. P India)
(36).Janab Syed Shah Najamuddin Qutbi .(Lucknow U. P India)
(37)Syed shah Ahmed Shafai Qutbi (Phone 8004974849)(S/O Janab Syed Shah Najamuddin Qutbi .(Lucknow U. P India))
(38) Syed Shah Ahmed Zaki Qutbi (Husain) and Syed Shah Ahmed Zain Qutbi (Hamza)(S/O Syed shah Ahmed Shafai Qutbi)

(37). Ameer kabeer Syed Shah Qutubuddin Muhammad Aquib Qutbi Ashtari Sajjada nasheen Aastana e Aaliya Suherwardia Firdausia kubriwiya Qutbia kabeeriya kada shareef Zila kaushambi u.p India. (Ba hawala Tareekh Aine awadh, Ansabul Ashraaf, Tazkirah Sadaat e Qutbia,Tasawwuf sindh Abdullah-Shah-Ghazi.) (S/O Janab Hakeem Syed Shah Shamsuddin Qutbi Quddasirrahul Aali.(Allahabad U. P India))

اے امامِ سیّدِ والانسب
دودمانت فخرِ اشرافِ عرب
(اقبالؒ)

اشرافِ عرب

☆

سیّد نجم الحسن فضلیؒ

ناشر
جاجنیری اکیڈمی
آستانہ سادات سانجہ
۱۰۸/ای جہانگیر روڈ غربی۔ کراچی ۷۴۸۰۰

حضرت عبداللہ شاہ غازی الاشتر البنہان کلفٹن کراچی

(شجرۂ نسب ص۸۱)

حضرت سید عبداللہ شاہ غازی الاشترؒ تبع تابعین میں سے تھے اور آپ حسنی و حسینی سید تھے۔ آپ کی ولادت باسعادت ۹۴ھ میں ہوئی۔

۱۴۲ھ مطابق ۷۵۹ء کے لگ بھگ آپ تبلیغ کی غرض سے عازمِ سندھ ہوئے۔ آپ کی والدہ ماجدہ سیدہ فاطمہ صغریٰ سیدنا امام حسینؓ کی پوتی تھیں۔ آپ سادات کرام کی پہلی شخصیت ہیں جو سندھ میں داخل ہوئی۔ آپ کی تعلیم و تربیت آپ کے والد محترم سید محمد نفس ذکیہؒ نے کی۔ آپ علم حدیث میں ملکہ تامہ رکھتے تھے۔ آپ کا شمار اکابر محدثین میں کیا جاتا ہے۔

سید عبداللہ شاہ غازی الاشترؒ کی شہادت

خلیفہ منصور عباسی نے ایک عرب سردار عمر بن حفص کو عقبہ بن مسلم کے ساتھ ۱۴۲ھ میں سندھ بھیجا۔ اسی زمانہ میں سید عبداللہ الاشتر علویؒ عباسیوں کے مقابلے میں مدعیِ خلافت تھے۔ بصرہ سے سندھ آئے۔ سندھ کے مقامی راجہ نے ہزار افراد ان کی مدد کے لیے پیش کیے۔ اسی دور میں سندھ میں شیعی تحریک کی بنیاد پڑ چکی تھی۔ انہی دنوں سندھ کے حکمران کی طرف سے ایک ہزار فوج افریقہ بھیجی گئی تھی۔ یہی وقت تھا جب ہشام بن عمرو تغلبی منصورہ آئے۔ یہ بھی عمر بن حفص کی طرح ہوا خواہانِ دودمانِ نبوی تھے۔ جس سے سید عبداللہ الاشتر علویؒ اور دیگر علویوں کا اثر و رسوخ بڑھا۔ اسی سال عقبہ بن مسلم نے اپنے بھائی شفیع کو علویوں کے مقابلہ کے لیے بھیجا۔ جس نے سید عبداللہ الاشتر علویؒ کو کراچی میں ساحلِ سمندر پر شکارگاہ میں گھیر لیا۔ سید عبداللہ کے ساتھ تھوڑے سے لوگ تھے جو شکار کے لیے ان کے ساتھ آئے تھے۔ بہرحال مقابلہ ہوا اور سید عبداللہ الاشتر جنگ کرتے

سلہ صفحہ ۱۰۸، تذکرہ اولیاء سندھ، صفحہ ۲۳ مخدوم جہانیان جہاں گشت از پروفیسر ایوب قادری

ہوئے ۱۵۱ھ میں شہید ہوئے۔ ان کا مزار آج بھی ساحلِ سمندر کلفٹن پر مرجعِ خلائق ہے۔ امام سید عبداللہ شاہ غازی الاشترؒ حضرت امام حسنؓ کے پوتے کے پوتے تھے۔

اولاد سید ابی محمد عبداللہ الاشتر کلفٹن کراچی۔ (شجرہ صفحہ)

پشت نمبر	اسماء
۷	۷۔ سید محمد ثانی
۸	۸۔ سید حسن جواد نقیب (کوفہ)
۹	۹۔ سید ابی عبداللہ
۱۰	۱۰۔ سید محمد قاسم
۱۱	۱۱۔ سید ابی جعفر
۱۲	۱۲۔ سید ابوالحسن
۱۳	۱۳۔ سید حسن
۱۴	۱۴۔ سید عیسیٰ
۱۵	۱۵۔ سید یوسف
۱۶	۱۶۔ سید رشید احمد غزنوی
۱۷	۱۷۔ امیر کبیر سید قطب محمد حسنی
۱۸	۱۸۔ امیر سید نظام الدین
۱۹	۱۹۔ قاضی سید رکن الدین
۲۰	۲۰۔ سید صدر الدین
۲۱	۲۱۔ سید قیام الدین
۲۲	۲۲۔ سید علی
۲۳	۲۳۔ سید احمد
۲۴	۲۴۔ سید زین الدین
۲۵	۲۵۔ سید صدر الدین ثانی
۲۶	۲۶۔ سید قطب الدین محمد ثانی

پشت	اسماء
۲۷	۲۷۔ سید علاء الدین
۲۸	۲۸۔ قاضی سید محمود
۲۹	۲۹۔ سید اعظم
۳۰	۳۰۔ سید محمد معظم
۳۱	۳۱۔ سید محمد طفیل
۳۲	۳۲۔ سید شاہ عالم اللہ قطبی
۳۳	۳۳۔ سید محمد نفیل — سید محمد ہادی، سید محمد نور، سید محمد عرفان، سید احمد شہید (بالاکوٹ سرحد)
۳۴	۳۴۔ سید محمد معظم
۳۵	۳۵۔ سید محمد اسحاق
۳۶	۳۶۔ سید ہدایت اللہ
۳۷	۳۷۔ سید عبدالرحیم شہید
۳۸	۳۸۔ سید محمد تقی
۳۹	۳۹۔ سید اکبر شاہ
۴۰	۴۰۔ سید علی محمد
۴۱	۴۱۔ سید عبدالعلی نصیر آبادی
۴۲	۴۲۔ مولانا حکیم فخر الدین
۴۳	۴۳۔ مولانا سید حکیم عبدالحئی
۴۴	۴۴۔ مولانا ابوالحسن ندوی

Abdullah Shah Ghazi was the great grandson of the Prophet Muhammad from the linage of Hasan Ibne Ali Ibne Abu Talib[citation needed], making him a member of the Ahl al-Bayt.

The growing popularity of Abdullah Shah caused concern amongst the Ummayyad dynasty who dispatched an army to Sindh. The Ummayyads, and their successors the Abbasids, were known for their hatred of the Banu Hashim (the tribe of Prophet Muhammad and Hadrat Ali ibn Abu Talib) and mercilessly tracked and killed thousands of members of this tribe.

Abdullah Shah was on a hunt in what is now present day Karachi, when the Ummayyad army intercepted his party. Out numbered, Abdullah Shah still chose to fight rather than submit to the Umayyad army. It is because of his display of valor in the face of the Ummayyad army that Abdullah Shah was given the honorable title of "Ghazi" meaning "victorious".

His shrine in Karachi is dated back to 1400 years ago, his brother, Misry Shah, who is also buried along the coastline in Karachi, is also remembered as a saint.

Many people claim to have been granted their wishes at the shrine and it is the center for people who throng the shrine all year round. Every year marks the Urs (festival) at the shrine for 3 days (dates: 20-22 Dhu al-Hijjah – 12th month of the Islamic calendar), marking the anniversery of Abdullah Shah Ghazi.A famous myth about the mazar is that Karachi never had a tropical disaster in a thousand year because of the shrine's blessing.

Abdullah Shah Ghazi is revered by both Sunni and Shia alike, however his blood line gives him a special status in the Shia community by some. Muhammad bin Qasim was sent for Abdullah Shah Ghazi in his hunt, however that time Raja Dahir, the ruler of Karachi had hosted Abdullah Shah Ghazi and had denied to turn him over to Qasim. Where Qasim revolted against him, massacring the army of Dahir and martyring Abdullah Shah Ghazi.

A VERY FAMOUS AND GREAT MIRACLE AT DARGAH SHAREEF'S WELL : The Dargah Shareef of Hazrat Abdullah Shah Ghazi (RA) is adjacent to sea (Arbia sea). The sea water and water of other wells in this area are salty. But the water in Dargah shareef of Hazrat Abdullah Shah Ghazi (RA) is very sweet, which is a great miracle and many people say the holy water of this dargah shareef is a great tabaruk and many people get cure by drinking this water.

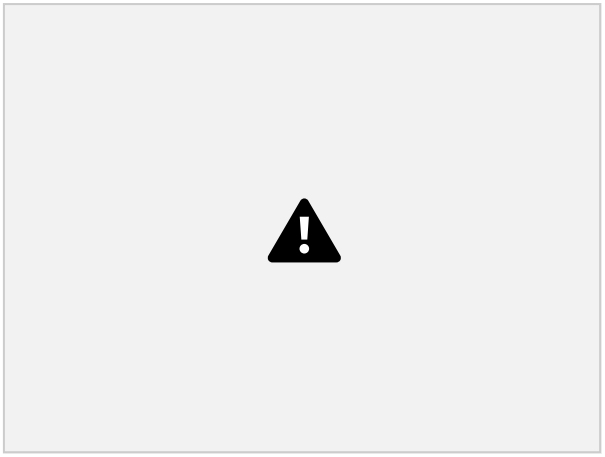

ROZE-E-IMAMZADA ABDULLAH SHAH GHAZI
AULAD-E-IMAM HASAN (A.S.)
KARACHI

ولادت

98ھ میں حضرت سید محمد نفس ذکیہ کے ہاں اسلام کے ایک درخشاں ستاری نے مدینہ منورہ میں آنکھ کھولی۔ یہ تھے حضرت عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ۔آپ حسنی حسینی سید ہیں۔یہ بات آپ کے شجرہ مبارک سے ثابت ہے۔

شجرہ نسب

آپ کے شجرہ مبارک پر نظر ڈالنے سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ کتنی قدیم ہستیوں میں سے ہیں۔آپ ہیں سید ابو محمد عبداللہ الاشتر (عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ) بن سید محمد ذوالنفس الزکیہ بن سید عبداللہ المحض بن سیدنا حضرت امام حسن رضی اللہ تعالیٰ عنہ بن حضرت سیدنا امیر المومنین علی ابن ابی طالب کرم اللہ وجہہ الکریم۔حضرت سیدنا حسن مثنیٰ کی شادی حضرت سیدہ فاطمہ صغریٰ بنت سیدنا حضرت امام حسین سے ہوئی اسی وجہ سے آپ حسنی حسینی سید ہیں۔

تعلیم

تحقیقات سے پتہ چلا ہے کہ آپ کی تعلیم وتربیت آپ کے والد صاحب کے زیر سایہ مدینہ منورہ میں ہی ہوئی۔آپ علم حدیث پر عبور رکھتے تھے۔اور کچھ مورخین نے تو آپ کو محدث تک بھی لکھا ہے۔

سندھ آمد

بنو امیہ کی حکومت زوال پذیر ہو چکی تھی جب 138ھ میں آپ کے والد صاحب نے مدینہ منورہ سے علوی خلافت کی تحریک شروع کی اور اپنے بھائی حضرت ابراہیم بن عبداللہ کو اس ضمن میں بصرہ روانہ کیا اس زمانے میں سادات کے ساتھ انتہائی ظلم کا رویہ روا رکھا گیا تھا۔اس ظلم کے کئی ایک واقعات معروف ہیں جن میں حضرت بن ابراہیم کا واقعہ خاص طور پر مشہور ہے۔جب آپ کو انتہائی بے دردی کے ساتھ دیوار میں زندہ چن دیا گیا۔یہ دیوار آج بھی بغداد میں مشہور ہے۔حضرت بن ابراہیم انتہائی وجیہ اور حسین وجمیل تھے جس کی وجہ سے آپ کا لقب دیباج مشہور ہوا۔عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ کے والد صاحب نے آپ کو اپنے بھائی حضرت ابراہیم کے پاس بصرہ بھیجا اور آپ وہاں سے ہوتے ہوئے سندھ کی جانب روانہ ہوئے۔ابن کثیر نے تاریخ الکامل' جلد پنجم میں لکھا ہے کہ آپ خلیفہ منصور کے دور میں سندھ تشریف لائے۔تحفتہ الکریم کے مصنف شیخ ابوتراب نے آپ کی سندھ میں موجودگی خلیفہ ہارون رشید کے دور سے منسوب کی ہے۔

آپ کی سندھ آمد کے ضمن میں دو قسم کے بیان تاریخ سے ثابت ہیں۔ایک یہ کہ آپ تبلیغ اسلام کیلئے تشریف لائے تھے اور دوسرے یہ کہ آپ علوم خلافت کے نقیب کی حیثیت سے (ملاحظہ ہو تاریخ الکامل لابن الشتر' ابن خلدون' طبری اور میاں شاہ مانا قادری کی تحریریں) تاجر کے روپ میں آئے تھے۔ تاجر اس لئے کہا گیا کہ آپ جب سندھ آئے تو اپنے ساتھ بہت سے گھوڑے بھی لائے تھے۔آپ نے یہ گھوڑے اپنے کم وبیش بیس مریدوں کے ہمراہ کوفہ سے خریدے تھے۔آپ کی آمد پر یہاں کے مقامی لوگوں نے آپ کو خوش آمدید کہا اور سادات کی ایک شخصیت کو اپنے درمیان پا کر بہت عزت اور احترام کا اظہار کیا۔آپ بارہ برس تک اسلام کی تبلیغ میں سرگرداں رہے اور مقامی آبادی کے سینکڑوں لوگوں کو مشرف بااسلام کیا۔

یہ تو ہے کہانی ظاہری حالات کی جن کو تاریخ الکامل لابن الشتر اور ابن خلدون' طبری وغیرہ میں قلمبند کیا ہوا ہے لیکن ایک عظیم ہستی جو حسنی حسینی سید ہے۔ حضرت علی کرم اللہ وجہہ کی اولاد ہے باطنی شاہسواری سے کیسے خالی ہو سکتی تھی۔ایک زمانہ کب سے ان کے فیض سے سیراب ہو رہا ہے۔ان کی باطنی زندگی پر ابھی کسی نے کچھ نہیں لکھا شاید اس وجہ سے کہ ان کی اپنی تحریریں یا ان کے کسی ہم عصر کی ان کے بارے میں کوئی تحریریں دستیاب نہیں ہیں اور شاید اس وجہ سے کہ وہ بہت پہلے کے اولیائے کرام میں سے ہیں اور دوسرے اس وجہ سے بھی کہ اس زمانے میں سلسلہ ہائے تصوف آج کی طرح نہیں تھی۔تصوف کے سلسلوں کی زیادہ شہرت اور تشہیر حضرت عبدالقادر جیلانی رحمتہ اللہ علیہ اور حضرت معین الدین چشتی رحمتہ اللہ علیہ اور دیگر بزرگوں کے آنے کے بعد ہوئی۔ان

کا مزار پر انوار مرجع خلائق بنا ہوا ہے یہ ویسے تو نہیں ہے ولایت تو حضرت علی کرم اللہ وجہہ کی مرہون منت ہے۔ وہی اس کا منبع ہیں یہ کسی نے نہیں لکھا اور نہ کہا کہ وہ جو امانت حضرت علی کرم اللہ وجہہ سے سینہ بسینہ چلی وہ ان کے حصہ میں نہیں آئی۔ شہادت ان کے آباؤ اجداد میں چلی آ رہی ہے۔ حضرت علی کرم اللہ وجہہ الکریم سے لے کر غازی شاہ رحمتہ اللہ علیہ صاحب کے والد اور چچا شہید ہوئے۔ خود آپ نے بھی شہادت کا رتبہ پایا اپنی جان سے زیادہ کیا چیز ہے جو اللہ تعالیٰ کی راہ میں قربان کی جا سکتی ہے یہ تو شہادت جلی ہے مگر کیا کسی نے لکھا ہے کہ وہ شہید خفی بھی ہیں؟ جب وہ حق ہو چکے تو راہ حق میں شہید ہوئے دولت سرمدی کا متحمل وہی ہو سکتا ہے جس کو فطرت اس کا اہل سمجھتی ہے۔

والد کی شہادت

حضرت عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ کے سندھ قیام کے دوران گورنر سندھ کو خبر آئی کہ آپ رحمتہ اللہ علیہ کے والد صاحب نے مدینہ منورہ میں اور ان کے بھائی حضرت ابراہیم نے بصرہ میں عباسی خلافت کے خلاف بغاوت کر دی ہے۔ 145ھ میں یہ اطلاع آئی کہ آپ کے والد حضرت سید محمد نفس ذکیہ مدینہ منورہ میں 15 رمضان المبارک کو اور اسی سال آپ کے چچا حضرت ابراہیم بن عبداللہ 25 ذیقعد (14 فروری 763ء) کو بصرہ میں شہید کر دیئے گئے۔

گورنر سندھ کی بیعت اور آپ کی تعظیم

حضرت عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ کے والد صاحب اور چچا کی شہادت کے بعد عباسی خلافت کے مرکز (خلیفہ منصور) سے آپ کی گرفتاری کے احکامات بھی صادر ہوئے۔ مگر چونکہ آپ کے حصے میں میدان جنگ میں شہادت لکھی گئی تھی لہذا آپ کی گرفتاری تو عمل میں نہیں آ سکی۔ حضرت حفص بن عمر گورنر سندھ آپ کی گرفتاری کے معاملے کو مسلسل ٹالتے رہے۔ ان کا خیال تھا کہ اس طرح کچھ وقت گزر جائے گا اور خلیفہ منصور غازی شاہ رحمتہ اللہ علیہ کی گرفتاری کے معاملے کو بھول جائے گا مگر جو لوگ اقتدار سے لگاؤ رکھتے ہیں وہ کسی طرح کا خطرہ مول نہیں لیتے بلکہ چھوٹے سے چھوٹے خطرے کو بھی برداشت کر سکتے۔ چنانچہ خلیفہ منصور کے دل سے ہرگز بھی عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ کی گرفتاری کا خیال ماند نہیں پڑا۔ حالانکہ گورنر سندھ حضرت حفص بن عمر نے اہل بیت سے محبت کے جذبے کے تحت یہ بھی خلیفہ کو کہا کہ حضرت عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ میری مملکت کی حدود میں نہیں ہیں لیکن خلیفہ کو اس پر بھی اطمینان نہیں ہوا۔

ساحلی ریاست آمد

گورنر سندھ حضرت حفص نے اپنی محبت' عقیدت اور سادات سے لگاؤ اور بیعت کر لینے کے بعد آپ کو بحفاظت ایک ساحلی ریاست میں بھیج کر وہاں کے راجہ کا مہمان بنایا۔ یہ راجہ اسلامی حکومت کا اطاعت گزار تھا۔ اس نے آپ کی آمد پر آپ کو خوش آمدید کہا اور انتہائی عزت اور قدر و منزلت سے دیکھا۔ آپ کو چار سال یہاں ان کے مہمان رہے۔ اس عرصہ میں آپ نے پہلے کی طرح اسلام کی تبلیغ جاری رکھی اور سینکڑوں لوگوں کو اسلام سے روشناس کرایا۔ لاتعداد لوگ آپ کے مریدین بن کر آپ کے ساتھ ہو گئے۔

سندھ میں اسلام کی تبلیغ

کہاں سندھ کہاں سعودی عرب۔ کتنی مسافت ہے۔ کتنا لمبا سفر ہے۔ صحابہ کرام کے بعد کوئی اسلام کی تعلیم دینے یا تبلیغ کرنے کیلئے سندھ نہیں آیا تھا۔ یہ بات بھی تاریخ ہی سے ثابت ہوتی ہے کہ اس کے بعد سندھیوں کے بنجر دل کی زمین میں سب سے پہلے حضرت عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ نے ہی اسلامی بیج بویا پھر اس کی آبیاری کی اور محبت' اخوت اور بردباری سے دلوں کو گرمایا اور ایمان کی زرخیزی سے روشناس کروایا۔ اس لئے کہ جو کام ان کے ذمہ تھا وہ

صرف ظاہر سے نہیں ہوسکتا تھا۔ تاریخ کو رخ عطا کرنے والے ظاہر کے ساتھ باطن کی دنیا کے شاہسوار بھی ہوتے ہیں۔ جن کا ظاہر پر کم اور باطن پر زیادہ زور اور توجہ ہوتی ہے۔

اسباب غیب

دراصل ان ہستیوں کیلئے اس دارالعمل میں جس جگہ کا انتخاب کیا ہوتا ہے وہاں ان کیلئے اسباب بھی مہیا ہوتے ہیں۔ (گورنر سندھ حضرت عمر بن حفص کا مطیع ہونا۔ اور آپ رحمتہ اللہ علیہ کی گرفتاری کے خلیفہ منصور کے احکامات ٹالنا۔ آپ کو بحفاظت دوسری ریاست میں بھیجنا یہ سب غیبی اعانت تھی اور آپ کے عمل کی تائید تھی) اگرچہ عباسی خلیفہ منصور آپ سمیت تمام سادات کے قتل کے درپہ تھا اس نے اطلاع ملنے پر بارہا حضرت عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ کو گرفتار کرنے کے احکامات دیئے لیکن قدرت نے جو کام آپ سے لینا تھا اس کیلئے پورا پورا اہتمام کیا ہوا تھا۔ ایک ایسا گورنر سندھ میں متعین تھا جو آپ کی تعظیم اور خیال کرتا تھا اور کسی قیمت پر آپ کو تکلیف نہ پہنچانا چاہتا تھا بلکہ ان نیک بخت گورنر یعنی عمر بن حفص نے آپ کے ہاتھ پر بیعت بھی کرلی تھی اور در پردہ آپ کی حمایت کرتا تھا۔

سیر و شکار

تاریخ سے ثابت ہے کہ اس زمانے میں جب آپ سیر اور شکار کی غرض سے کہیں جاتے تھے تو شان و شوکت اور کروفر سے اور ساز و سامان بھی ساتھ ہوتا تھا جس سے آپ کی شان و شوکت کا اظہار ہوتا تھا۔ کیوں نہ ہو حضرت عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ کس نسب کے چشم و چراغ تھے۔ یہ غالباً اس لئے بھی تھا کہ آپ کی درویشی پر امارت کا پردہ بھی پڑا رہے۔ اور جو امانت آپ کے سپرد تھی آپ کے سینے میں محفوظ و مخفی رہے۔

بھائی

یہ بھی باور کرانا ضروری ہے کہ آپ کے علاوہ آپ کے ایک دوسرے بھائی بھی ہیں وہ بھی بہت بڑے ولی تھے۔ انہوں نے بھی اسلام کی گراں قدر خدمات انجام دیں ہیں۔ آپ کا مزار مراکش میں ہے اور وہاں کا سب سے معروف مزار ہے۔ اور وہاں مرجع' خلائق بنا ہوا ہے۔ اس کا تذکرہ بھی تاریخ اسلام میں موجود ہے۔

حکمرانی

حکومت دو قسم کی ہوتی ہے ایک خطہ پر اور دوسری حکومت جو حقیقی حکومت ہے وہ قلوب پر ہوتی ہے عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ کی حکومت ظاہر و باطن دونوں پر قائم ہے۔ سارے دفتر ان کے ہیں جہاں تمام زائرین کی مرادوں اور دعاؤں کی عرضیاں موصول کی جاتی ہیں اور پھر ان پر احکامات صادر ہوتے ہیں۔ ثبوت یہ ہے کہ اگر زائرین کی مرادیں پوری نہ ہو رہی ہوں تو پھر یہ جم غفیر کیسا۔ جو ہر آنے والے دن کے ساتھ بڑھ رہا ہے۔ جمعرات کو تو آپ رحمتہ اللہ علیہ کے مزار کی سیڑھیاں بھی چڑھنا دشوار ہوتا ہے۔ عام ایام میں بھی زائرین کا تانتا بندھا رہتا ہے۔ عبداللہ شاہ غازی رحمتہ اللہ علیہ کی باطنی حکومت کا حال کہاں سے معلوم ہوگا کس نے اس پر لکھا ہے کس لائبریری اور دفتر سے یہ تفصیل موصول ہوگی سرکار دو عالم ﷺ کی حدیث مبارک ہے آپ ﷺ نے فرمایا کہ میرے امتی بنی اسرائیل کے نبیوں کے ہم مرتبہ ہونگے۔

یہ وہی ہیں جنہوں نے اپنی زندگی امت محمدی ﷺ کیلئے وقف کی ہوگی۔ یہ وہی ہیں جن کو خم امت لاحق ہوگا۔ نبی ﷺ کی پیروی میں انہوں نے وہی کچھ کیا ہوگا جو نبیوں نے کیا۔

KARAMAT HAZRAT ABDULLAH SHAH GHAZI (RAHMATULLAH ALLAIH)

HAZRAT ABDULLAH SHAH GHAZI (RAHMATULLAH ALLAIH) is one of the Greatest and Famous Sufi saint. Hazrat Abdullah Shah Ghazi (RA). Belongs to the 4th generation of Hazrat Amir ul Momineen Hazrat Ali Karam Allahu Wajhu. Hazrat Abdullah Shah Ghazi (RA) migrated from Arab to Karachi area and took wisal here.

A VERY FAMOUS AND GREAT MIRACLE AT DARGAH SHAREEF'S WELL : The Dargah Shareef of Hazrat Abdullah Shah Ghazi (RA) is adjacent to sea (Arbia sea). The sea water and water of other wells in this area are salty. But the water in Dargah shareef of Hazrat Abdullah Shah Ghazi (RA) is very sweet, which is a great miracle and many people say the holy water of
this dargah shareef is a great tabaruk and many people get cure by drinking this water.

SUCH KARAMATS & FAIZS OF AULIYA ALLAH EXISTS EVEN TODAY :- It is places of Auliyas (Great friends of Allah) where you will find Such Miracles. Below is list of Other Dargah Shareefs where you will find such karmats of Water.

Well at Dargah of Hazrat Daata Ganj Baksh Ali Hajveri (RA), Lahore.

Sweet Water Well at Dargah Hazrat Syed Shareef-ul-Madani (Qad das Allahu Sirra ul Azeez) , Ullal Shareef in Karnataka (where you will find arbian sea adjacent to dargah shareef) and 10 Lakhs people witnessed the miracle of this well during the urs e shareef when there was shortage of water in the entire ullal. Also there are also many other great miracles of this great Tabayee Hazrat Syed Shareef-ul-Madni (Qaddas allahu sirra ul azeez) who came from Madina Shareef.

Abdullaah Shah Ghazi is one such revered personality who is not only very close to a Holy Masoom lineage wise (he is the fourth descendent of Imam Hasan (AS) and his tree is as follows: Abdullaah Al-Ashtar Ibn-e-Mohammad Nafs-e-Zakayya Ibn-e-Abdullaah Al-Mahaz – Ibn-e-Hasan Al-Muthanna Ibne Imam Hasan (AS).

He is the grand son of Abdullaah al Mahaz.
Abdullaah al- Mahaz s maternal grandfather was Imam Hussain (AS)
Abdullaah al-Mahazs paternal grandfather was Imam Hasan (AS)
Abdullaah al- Mahazs mother was Bibi Fatima Sughra binte Imam Hussain AS.
Abdullaah al -Mahazs father was Hazrat Hasan Muthanna Ibn-e-Imam Hasan (AS)
Abdullaah al-Ashtar was born in 98 Hijra (716 AD) in Madina-tu-Rrasool (SAWW).
In 138 Hijra , Abdullaah al-Ashtar undertook a perilous journey by sea to reach Sindh.

Like some other areas Sindh too was under the dominion of so-called muslim rulers of Abbasid dynasty.

When Syed arrived in Sindh , the area was under the governorship of one Omar Ibn Hafs who was the hand-picked man of Mansoor Abbasi.

Abdullaah Al-Ashtar was among the most wanted men during the reign of Mansoor Abbasi. Hence it was a great challenge for him to preach the message of Hussainiyat in Sindh- an area under the rulership of Abbasids.

However Syed entered Sind as a merchant of horses so that he raises no eyebrows and continued his mission in this guise for a while.

He met the governor , Omar , who also had a considerable love and respect for Ahl-e-Bayt AS unlike other representatives of a normal Abbasid setup. Omar extended great facilitation to Syed and when he formally started preaching Omar also did Syed s Baiyaat.

When he started formal propagation the fertile land of Sindh started to produce devout disciples of Syed filled with the love of Ahlul Bayt (AS) – Something which could be testified even to this date.

In the mean time it was 145 Hijra when Syed learnt that back home in Madina his revered father Hazrat Mohammad Nafs-e-Zakayya Ibne Abdullaah Al- Mahaz has been martyred for raising his voice against the

tyranny and for launching a movement against the cursed regime of Abbasid dynasty. Syed s uncle , Ibrahim Ibn-e-Abdullaah Al-Mahaz was also martyred in Basra in the backdrop of same movement.

Now syed became much alarmed and so did the respecting governor Omar Al Hafs. Omar advised Syed to move to one of the Hindu Rajas having his small rulership in one of the frontier(boundary) regions of Sindh.This raja had a special love for Ahlul Bayt AS. Syed ,did early written correspondence with the Raja ,after which Raja invited him over and treated him as princes ,taking care of him very well.

This shows that not only common muslims but hindus of Sindh too ,revered Saadat very much . This raja repeated the history of raja Dahir ,who took the wrath of Ommayyads for protecting Saadat and for denying to hand them over to Ommayyads.

Although Omar ibne Hafs felt contented that the arrangement would work fine ,somehow , Mansoor Abbasi learnt of something going wrong somewhere. He demanded of the governor to either hand over Abdullaah Ashtar to him alive or kill him and send his head to Mansoor in Baghdad.

When mansoor couldnt get any result of his liking he , axed Omar Ibn-e-Hafs and sent him to Africa.

In 146 Hijra hasham was sent to Sind as governor on behalf of Mansoor. The same demand was made by Mansoor to Hasham.

In the meantime Syed continued his services to Islam un-hindered ,many people belonging to Zaidiyaah sect also became devotees of Syed ,inspired by his character.

Hasham called on the Hindu raja and put forth the demand regarding Abdullaah al-Ashtar ,but Raja plainly refused.

Since Hasham himself had considerable fear of the family of Prophet (PBUH) ,he wanted to find an excuse so that ,he may not have to committ a grave sin by handing over this revered personality or killing him.

So it was deliberately propagated by him that discussions and dialogue for getting hold of Abdullaah al-Ashtar are under way and Caliph was also updated with the same information.

But one Safeeh Ibne Amrv who was a special loyal to Mansoor Abbasi learnt and attacked Syed Abdullaah Al-Ashtar along with his army.

Abdullaaah Ashtar was a brave men ,a descendant of Imam Hasan and a flag bearer of the golden traditions of Karbala. He and his companions chose to fight the attacking army. Out-numbered, he preferred to fight rather than submitting and it is because of this display of valor he was given the title of “Ghazi” meaning “victorious”.

Ali Hussain Rizvi writes in Tareekh-e-Shiyaan-e-Ali that Abdullaah fought really bravely. One after the other his companions ,embraced Shahadat . Similarly Abdullaah Al-Ashtar attained innumerable injuries and fell down from his source . His companions hid him under their own bodies so that his head may not be cut and may not be sent over to Baghdad. The plan worked well . His body was never recognized . Afterwards some native Sindhis who had recently embraced Islam took pains and the bodies were all flown in the Sea.

The Mazaar of Syed in Clifton reminds of the sacrifice offered by yet another generation of Saadat and speaks volumes of the bravery of the noble Syed and his noble companions who embraced Shahadat alongside him.

Every year his URS is commemorated during the days of his Shahadat from 20th to 22nd Zilhajj in which devotees from all over the countries participate. According to one tradition it was the year 773 AD when he embraced Shahadat.

Last year many devotees embraced Shahadat when yazidi terrorists attacked the devotees on the eve of URS. Likewise this year too , a near suicide attempt has been foiled the vicinity of Syeds Mausoleum only yesterday when his URS traditions were beginning to get underway.

There are a countless numbers of karaamaat and miracles associated with him . The most obvious is a sweet water fountain (chashma). The Shrine of Syed in Clifton Karachi is dated back to 1400 years ago . A well-known and most oft repeated thing seen by most people living in this southern town of Pakistan ,many times during their lifetimes, is that the worst cyclones,which are expected to hit this coastal city of Karachi die down miraculously before

ever hitting and its historically said that karachi never had a tropical disaster in a thousand year because of the shrines blessing.

His brother Syed Misri Shah is also said to have been buried along the southern coastal line of Pakistan.

Prophet PBUH said:
” Jisne meri aulad mein kisi ki ziyarat ki mein qayamat mein uski ziyarat karunga aur tanha na chorhun ga ”

Whoseover visited any one from my descendants , I shall visit him on Qiyamah and will not leave him alone.

It is greatly desirable for Millat-e-Jaffaria Pakistan to carry out organized and detailed research on the revered personalities of this area as they are our religious stalwarts and noble ancestors and it is the greatest binding on us to recognize their sincere services and let everybody know of the true message of Islam. It is a right (haq) of these personalities on us that at least we should offer to them pursa of their Masoomeen ancestors by visiting them during our days of mourning i.e

Shahadat Anniversaries of Masoomeen (AS).

Maqdoor ho to khaak se poochun ke ay layeem
Tu ne wo ganj haye giran maya kia kiye!

Please recite a fateha for Shohada-e-Millat-e-Jaffaria

Assalaamu Alaaika Ya Abaa Abdillaaah (AS)
Assalaamu Alaaika Ya Ansaara Deenillaah
Assalaamu Alaaika Jamee-in Ibadillaah Isswaliheen

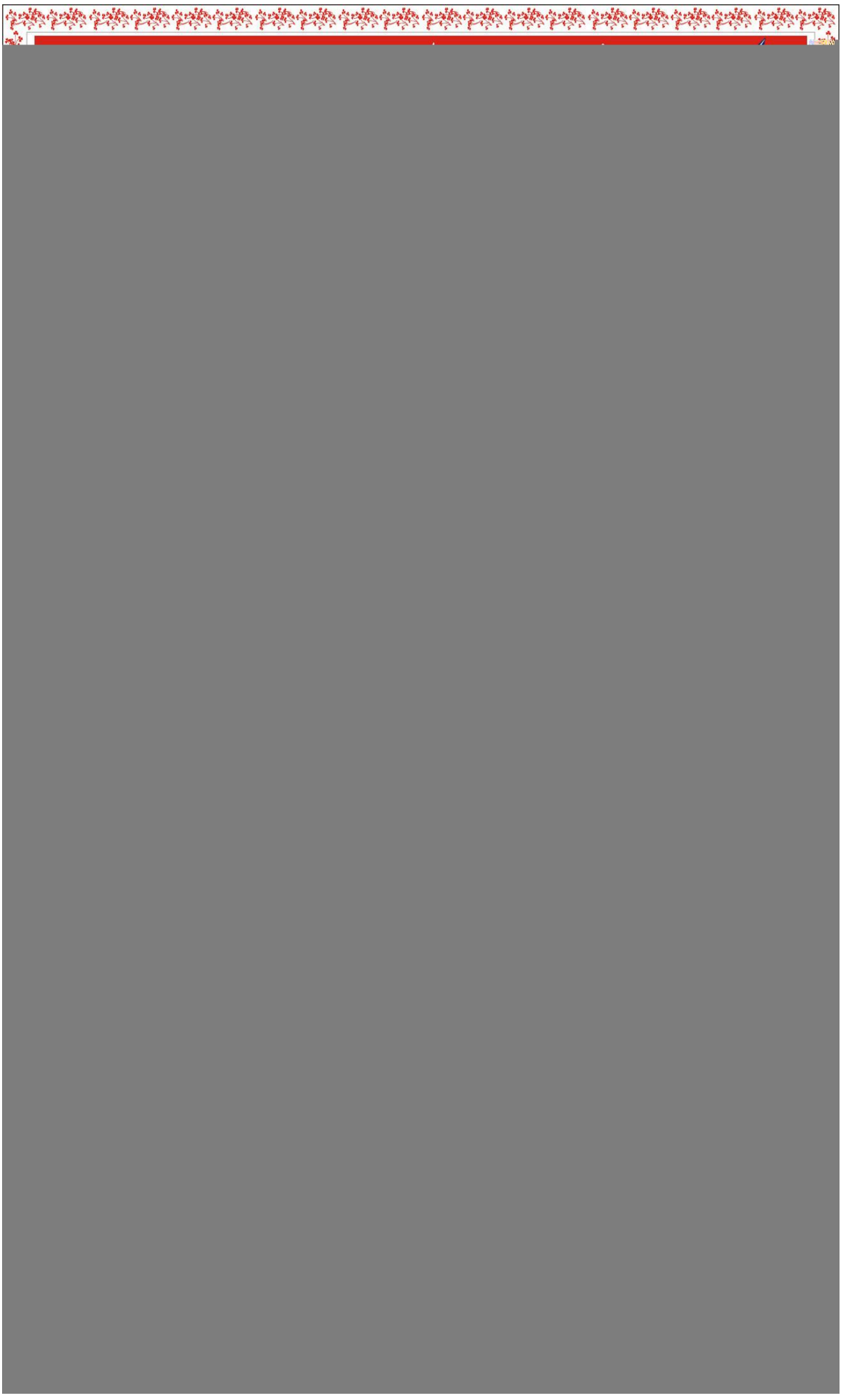

Hazrat Syed Misri Shah Ghazi رحمتہ اللہ علیہ Descendant of Imam Hasan ibn Ali. Brother of Abdullah Shah Ghazi.

Ba hawala Tareekh e Sindh by Allama Syed Sulemaan Nadvi r.a

ساجہ ان کی بڑی عزت کرتا تھا، اور ہر طرح کی آزادی ان کو دے رکھی تھی[1]،

جب اس کی خبر ان کے ہواخواہوں کو معلوم ہوئی تو لوگ ادھر ادھر سے ان کے پاس جمع ہونے لگ گئے، یہاں تک کہ چار سو آدمی ان کے گرد جمع ہو گئے، وہ اپنا تمام وقت عیش و آرام اور شکار میں گذارتے تھے، اور زیدیہ فرقے کے عقائد کی اشاعت کرتے تھے، کہتے ہیں کہ سندھ میں شیعیت اسی وقت سے داخل ہوئی،

خارجیوں کی تبلیغ

ان شیعوں کے مقابلہ میں خارجی بھی اپنے فرائض سے غافل نہ تھے، اور ہر جگہ اپنے عقائد کی تبلیغ کرتے تھے، عمان کے خارجی اکثر سندھ آتے اور لوگوں کو عباسیوں کے برخلاف ابھارتے

سنہ ۱۴۸ھ میں حسان بن مجالد ہمدانی خارجی رقہ سے بذریعہ جہاز سندھ پہنچا، اور تمام اطراف کا دورہ کر کے بڑی کوشش کی کہ ان میں خیال پیدا ہو، تو ایک زبردست فوج تیار کر کے عباسیوں کا مقابلہ کرے، مگر اہل سندھ عمر بن حفص نے جو سادات کا طرفدار تھا، اس کی دال نہ گلنے دی اور مجبوراً وہ موصل واپس گیا،

حضرت عبداللہ الاشتر تقریباً نو دس سال بہت آرام اور بے فکری سے زندگی گذارتے رہے، ابن حفص نے بھی اس عرصہ میں سندھ کی حکومت بہت اچھی طرح کی، کسی قسم کی شکایت نہ ہونے پائی اور ہر جگہ امن و امان رہا، قرب و جوار کے ہندو راجاؤں سے بھی تعلقات اس کے اچھے رہے، لیکن اس کے عہد میں کوئی نیا علاقہ داخل نہیں ہوا، اور عمر بن حفص جیسے مدبر اور جانباز

[1] ان عبارتوں سے یہ معلوم ہو سکا کہ وہ کون راجہ تھا جو سندھ یا ہندوستان کے کس حصہ پر قابض تھا، لیکن آگے جو بیان آتا ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ دریائے سندھ کی کسی شاخ کے پاس جو بگیستان سے متصل ہے اس کا ملک تھا، غالباً یہ کچھ سندھ اور بگیستان کے درمیان واقع ہوگا،

سے توقع کے خلاف یہ بات ہوئی،

سنہ ۱۵۱ھ میں منصور خلیفہ عباسی کو عبداللہ الاشتر کے حالات معلوم ہو گئے، تو عمر بن حفص کے پاس فرمان بھیجکر جواب طلب کیا، عمر بہت گھبرایا، اس سے کوئی جواب بن نہ پڑتا تھا، آخر چند خاص معتمد لوگوں کو جمع کر کے خلیفہ کے خط سے آگاہ کیا، اور کہا کہ اگر اقرار کرتا ہوں تو حکومت سے نکال دیا جاتا ہوں، اور خلیفہ کے پاس چلا جاؤں تو قتل کر دیا جاؤں گا، اور انکار کر جاؤں تو دروغ گوئی کرنی پڑے گی،

مجلس کے ایک شخص نے کہا کہ میرا نام لکھ کر بھیج دیجئے، غالباً مجھ کو طلب کرے گا، اس وقت مجھے روانہ فرما دیں، یقین ہے کہ خلیفہ آپ کے سبب مجھے معاف کرے،

عمر نے کہا کہ ایسا نہ ہوگا، بلکہ مجھے اندیشہ ہے کہ تم قتل کر دیے جاؤ گے، اس نے کہا کہ اگر ایسا بھی ہوا تو کچھ پرواہ نہیں میں آپ پر تصدق ہو جاؤں گا، چنانچہ اس شخص کی تجویز کے مطابق وہ گرفتار کر کے قید کر دیا گیا، اور منصور کو اس کی خبر دی گئی، منصور نے اس کو طلب کیا، آخر بیچارہ جان دے بیٹھا، قتل کر دیا گیا، اور اپنے افسر کی جان اور عزت پر قربان ہو گیا،

اگرچہ عمر بن حفص کی جان اس کے وفادار ساتھی نے بچا دی، اور منصور اقراری مجرم کے قتل کے بعد عمر پر قانوناً کچھ نہ کر سکا، مگر دل اس کا صاف نہ ہوا، اور سیاسی مصالح کی بنا پر اس کی تبدیلی ضروری سمجھی گئی، وہ عمر کی قابلیت سے بھی واقف تھا، اور جانتا تھا کہ وہ بہتر حکمران ہے، اس لئے اس کو ترقی دے کر سنہ ۱۵۱ھ میں افریقہ کا گورنر مقرر کر دیا۔

ہشام کی حکومت

اس اثنا میں کہ وہ اس کی تبدیلی پر غور کر رہا تھا، اور سندھ کے لئے اس کے جانشین کی تلاش تھی، ایک دن وہ تفریحاً جا رہا تھا کہ راستہ میں ایک شخص پر نظر پڑی اس نے

[1] الکامل جلد ۵ صفحہ ۲۰۹،

شروع کردی، اور مدافعت کے سامان میں مشغول ہوگیا، عمر جب منصورہ پہنچا تو اس نے اندر داخل ہونے نہ دیا، اور نہ اطاعت کی طرف مائل ہوا، ناچار عمر بن حفص نے دیبل میں قیام کیا، اور وہیں سے جنگی انتظامات کرنے لگا،

لوگ والی منصورہ کے مظالم سے تنگ آ گئے تھے، جیسے ہی ابن حفص ہزار مرد کا دیبل میں قیام کی خبر لی، منصورہ اور اطراف ملک سے دیبل پہنچنے لگے، ایک دو جنگ کے بعد ہی والی منصورہ کو معلوم ہوگیا کہ فتح ناممکن ہے، کیونکہ خود اس کی فوج کے لوگ اور جس کو وہ اپنا طرفدار سمجھتا تھا اس سے ٹوٹ کر ابن حفص سے ملے، اس طرح وہ بالکل بے یار و مددگار ہوگیا آخر صلح کا طالب ہوا، عمر بن حفص نے اس کو امان کا وعدہ دے کر منصورہ پر قبضہ کرلیا، اور عیینہ بن موسیٰ کو قید کرکے پایہ تخت خلیفہ کے پاس روانہ کردیا،[۱] لیکن قیدی یہ جانتا تھا کہ خلیفہ اس کو ضرور قتل کردے گا، اس لئے محافظوں کی غفلت سے فائدہ اٹھا کر بھاگ نکلا، اور سجستان کی طرف روانہ ہوا، وہ مقام "رخج" تک پہنچا تھا کہ کچھ عینی لوگوں نے باغی معلوم کرکے اس کو گرفتار کرلیا، اور سر کاٹ کر پایہ تخت لے پہنچے۔

سندھ میں شیعیت کی ابتداء

عمر بن حفص منصورہ پہنچکر سلطنت کے انتظام میں مشغول ہوگیا، اسی اثنا میں عبداللہ اشتر علوی نے چند جان نثاروں کے ساتھ بصرہ پہنچکر چند اچھے اور عمدہ گھوڑے خریدے اور جہاز پر بیٹھکر سندھ پہنچے، اور لوگوں کو یہ بتایا کہ ہم لوگ گھوڑوں کے تاجر ہیں، حالانکہ ان کا مقصد بنی عباس کے خلاف سادات کے لئے خلافت حاصل کرنا تھا، والی منصورہ عمر بن حفص کے پاس جب یہ لوگ پہنچے تو اس نے ان کی بڑی آؤبھگت کی ان کو تاجر سمجھکر گھوڑے پسند کئے، اور حکم دیدیا کہ تمام شہر میں جتنے اچھے گھوڑے فروخت کے لئے ہوں وہ ان کے پاس حاضر کئے جائیں۔

(۱) ابن اثیر جلد ۵ ص ۲۳۰ [illegible]

خود عبداللہ نے تو اس معاملہ کو ابھی تک راز میں رکھنا چاہا، مگر ان کے ایک ساتھی نے والی منصورہ سے اس کا ذکر کر ہی دیا، اس نے کہا کہ گھوڑوں کے متعلق جو حکم آپ نے دیا ہے ہم لوگ اس میں مشکور ہوں، مگر اس سے زیادہ بہتر چیز آپکے سامنے پیش کرتا ہوں، جو دنیا اور آخرت دونوں میں آپکے لئے باعث نجات ہے، اس کے بعد حالات سے آگاہ کیا، والی خود ان لوگوں میں سے تھا جو سادات کے طرفدار تھے، اس لئے ان کی دعوت کو بڑی خوشی سے قبول کرلیا، اور خود ان کو ایک مخفی جگہ میں رکھا، اور شہر کے بڑے بڑے صاحب اثر لوگوں کو بلا کر ان سے مشورہ لیا، اور آخر یہ طے پایا کہ ایک دن جمعرات کو بیعت لی جائے، اور اس کے لئے ایک سفید علم (جھنڈا) تیار کیا گیا، اور سفید کپڑے عبداللہ کے لئے بنائے گئے، جس کو پہن کر وہ خطبہ دیتے۔

یہ تمام انتظام ٹھیک ہوچکے تھے کہ اتفاقاً اسی دن ایک جہاز بغداد سے پہنچا جس میں ایک تاجر بھی تھا، وہ عراق سے ایک خط عمر بن حفص کی بیوی کا لایا جس میں لکھا تھا کہ محمد اور ابراہیم دونوں خلافت کی فوجوں سے شکست کھا کر مارے گئے، عمر یہ خط لے کر عبداللہ کے پاس گیا، اور ان کے باپ اور چچا کے مرنے پر تعزیت دی، یہ سن کر عبداللہ اشتر بہت گھبرائے اور مایوسی کے عالم میں کہا، کہ میرا راز ظاہر ہوگیا اور اب میری جان تمہارے ہاتھ میں ہے۔

عمر نے ان کو بڑی تسلی دی، اور کہا کہ ہمارے جوار میں ایک بارعب اور بڑا سجادہ راجہ رہتا ہے، اس سے خط و کتابت کرکے تمہارے لئے اس کی جگہ بنادوں گا، چنانچہ اس نے اس سے اس معاملہ میں خط و کتابت کی، چونکہ وہ ایک بڑی سلطنت کا مالک اور خود مختار تھا، اس لئے خلیفہ کے حکم پر وہ مجبور نہیں کیا جاسکتا تھا، اور اپنے قول و قرار کا بڑا پکا تھا، اس بناء پر بھروسے کے قابل سمجھ کر عمر نے عبداللہ کو اس کے پاس روانہ کیا، جہاں وہ آرام کی زندگی بسر کرنے لگے، کیونکہ

(۱) ابن اثیر جلد ۵ ص ۲۲۵ لیدن۔

ساجہ ان کی بڑی عزت کرتا تھا، اور ہر طرح کی آزادی ان کو دے رکھی تھی[۱]،

جب اس کی خبر ان کے ہوا خواہوں کو معلوم ہوئی تو لوگ اِدھر اُدھر سے ان کے پاس جمع ہونے لگ گئے، یہاں تک کہ چار سو آدمی ان کے گرد جمع ہو گئے، وہ اپنا تمام وقت عیش و آرام اور شکار میں گذارتے تھے، اور زیدیہ فرقے کے عقائد کی اشاعت کرتے تھے، کہتے ہیں کہ سندھ میں شیعیت اسی وقت سے داخل ہوئی،

خارجیوں کی تبلیغ — ان شیعوں کے مقابلہ میں خارجی بھی اپنے فرائض سے غافل نہ تھے، اور ہر جگہ اپنے عقائد کی تبلیغ کرتے تھے، عمان کے خارجی اکثر سندھ آتے اور لوگوں کو عباسیوں کے برخلاف ابھارتے

سنہ ۱۵۰ھ میں حسان بن مجاہد ہمدانی خارجی رقہ سے بذریعہ جہاز سندھ پہنچا، اور تمام اطراف کا دورہ کر کے بڑی کوشش کی کہ ان میں خیال پیدا ہو، تو ایک زبردست فوج تیار کر کے عباسیوں کا مقابلہ کرے، مگر اہلِ سندھ عمر بن حفص سے جو سادات کا طرفدار تھا، اس کی دال نہ گلی اور مجبوراً وہ موصل واپس گیا،

حضرت عبداللہ الاشتر تقریباً نو دس سال بہت آرام اور بے فکری سے زندگی گذارتے رہے، ابن حفص نے بھی اس عرصہ میں سندھ کی حکومت بہت اچھی طرح کی، کسی قسم کی شکایت نہ ہونے پائی، اور ہر جگہ امن و امان رہا، قرب و جوار کے ہندو راجاؤں سے بھی تعلقات اس کے اچھے رہے، لیکن اس کے عہد میں کوئی نیا علاقہ داخل نہیں ہوا، اور عمر بن حفص جیسے مدبر اور بہادر

[۱] ان عبارتوں سے یہ نہ معلوم ہو سکا کہ وہ کون راجہ تھا جو سندھ یا ہندوستان کے کس حصہ پر قابض تھا، لیکن آگے جو بیان آتا ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ دریائے سندھ کی کسی شاخ کے پاس جو کہ افغانستان سے متصل ہے اس کا ملک تھا، غالباً یہ کچھ سندھ اور افغانستان کے درمیان واقع ہوگا،

سے توقع کے خلاف یہ بات ہوئی،

۱۵۱ھ میں منصور خلیفہ عباسی کو عبداللہ الاشتر کے حالات معلوم ہو گئے، تو عمر بن حفص کے پاس فرمان بھیج کر جواب طلب کیا، عمر بہت گھبرایا، اس سے کوئی جواب بن نہ پڑتا تھا، آخر چند خاص معتمد لوگوں کو جمع کر کے خلیفہ کے خط سے آگاہ کیا، اور کہا کہ اگر اقرار کرتا ہوں تو حکومت سے نکال دیا جاتا ہوں، اور خلیفہ کے پاس چلا جاؤں تو قتل کر دیا جاؤں گا، اور انکار کر جاؤں تو والی کرنی پڑے گی،

مجلس کے ایک شخص نے کہا کہ میرا نام لکھ کر بھیج دیجئے، غالباً مجھ کو طلب کرے گا، اس وقت مجھے پابجولاں روانہ فرما دیں، یقین ہے کہ خلیفہ آپ کے سبب مجھے معاف کر دے،

عمر نے کہا کہ ایسا نہ ہوگا، بلکہ مجھے اندیشہ ہے کہ تم قتل کر دیے جاؤ گے، اس نے کہا کہ اگر ایسا بھی ہوا تو کچھ پرواہ نہیں، میں آپ پر تصدق ہو جاؤں گا، چنانچہ اس شخص کی تجویز کے مطابق وہ گرفتار کر کے قید کر دیا گیا، اور منصور کو اس کی خبر دی گئی، منصور نے اس کو طلب کیا، عمر نے بھیجا، جان دے دے گا، قتل کر دیا گیا، اور اپنے افسر کی جان اور عزت پر قربان ہو گیا[۱]،

اگرچہ عمر بن حفص کی جان اس کے وفادار ساتھی نے بچا دی، اور منصور اقراری مجرم کے قتل کے بعد عمر سے تاوان تو کچھ نہ کر سکا، مگر دل اس کا صاف نہ ہوا، اور سیاسی مصالح کی بنا پر اس کی تبدیلی ضروری سمجھی گئی، وہ عمر کی قابلیت سے بھی واقف تھا، اور جانتا تھا کہ وہ بہتر حکمران ہے، اس لئے اس کو ترقی دے کر ۱۵۱ھ میں افریقہ کا گورنر مقرر کر دیا۔

ہشام کی حکومت — اس اثنا میں کہ وہ اس کی تبدیلی پر غور کر رہا تھا، اور سندھ کے لئے اس کے جانشین کی تلاش تھی، ایک دن وہ تفریحاً جا رہا تھا کہ راستہ میں ایک شخص پر نظر پڑی اس نے

[۱] الکامل جلد ۵ صفحہ ۲۰۱، ۱۴۳،

بنو راس کو دیکھا، اور قصر خلافت میں واپس آگیا، یہ شخص بڑا ہوشیار تھا، اس نے اس موقع سے
فائدہ اٹھانا چاہا، چنانچہ وہ منصور کے پاس پہنچا، اور ملاقات کی خواہش کی، منصور اس سے
بالکل واقف تھا، تاہم اس کو اندر بلالیا اور آنے کا سبب دریافت کیا، اس نے کہا
یا امیر المومنین! جب آپ کی سواری چلی گئی، تو میں گھر پہنچا، وہاں میں نے اپنی دوشیزہ بہن کو
دیکھا جو نہایت حسین اور عقل و دین داری میں کامل ہے، میں نے خیال کیا کہ امیر المومنین کے
سوا اور کوئی اس کے لائق نہیں ہے، اس لئے درخواست ہے کہ اس کو اپنے عقد میں لے لیجئے،
منصور نے سر جھکا لیا، اور کچھ سوچ کر کہا کہ اچھا تم جاؤ، میں اس کا جواب پھر دوں گا، اس
چلے جانے کے بعد منصور نے اپنے سکریٹری (کاتب السر) ربیع سے کہا کہ میں اس کی درخواست
ضرور قبول کر لیتا، اگر جریر شاعر کا یہ شعر نہ سنا ہوتا۔

لو تطلبین خولۃ من تغلب — فالزنج اکرم منہم اخوالا

قبیلہ تغلب والوں کو خولہ کا پیغام نہ دو اس لئے کہ ماموں بننے کے لئے زنگی بھی ان سے بہتر ہیں،

یہ شخص قبیلہ تغلب کا تھا اور اس کا نام ہشام بن عمرو تغلبی تھا، اس لئے منصور نے اس کی
قرابت پسند نہ کی،

پھر اس سے کہا کہ اس کو کہہ دو کہ تمہاری اس پیش کش کا شکریہ، مگر مجھے اس کی ضرورت
نہیں ہے، البتہ تمہارے ساتھ یہ احسان کرنا چاہتا ہوں کہ تم کو سندھ کی ولایت سپرد کروں، اب
تم فوراً وہاں روانہ ہو جاؤ، ادھر عمر بن حفص کو لکھا کہ ہشام جب پہنچے تو فوراً اس کو اپنا عہدہ
سپرد کر کے تم افریقہ روانہ ہو جاؤ،

جب ہشام دربار خلافت میں رخصت کے لئے حاضر ہوا، تو خلیفہ منصور نے خلوت
سے ہشام کو اس کی تاکید کی کہ عبد اللہ اشتر کو جس طرح ہو سکے قید کرلو اور اگر آسانی نہ ممکن ہو

اور راجا کے ملک پر حملہ کرکے اس میں کامیابی حاصل کرو،

ہشام سندھ پہنچا، اور عمر بن حفص کی جگہ سندھ کا والی و گورنر ہوا، مگر چونکہ یہ خود بھی عمر
بن حفص کی طرح سادات کا طرفدار تھا، اس لئے متحیر تھا کہ کس طرح خلیفہ کی خواہش پوری
کی جائے، اس کے لئے اس نے پہلی تدبیر یہ کی کہ لوگوں میں یہ مشہور کردیا کہ میں عبد اللہ اشتر
کے لئے راجا سے خط و کتابت کر رہا ہوں، اور اس طرح سے باوجودیکہ خلیفہ کی جانب سے تاکیدی
احکام اس معاملہ میں عجلت کے لئے آتے رہے، وقت ٹالتا رہا، اور خود خلیفہ کو بھی اسی قسم کی
اطلاع دے کر مطمئن رکھا،

اسی دوران میں ایک مقام پر بغاوت ہو گئی، اس نے اپنے بھائی سفیح کو ایک دستہ فوج
دے کر اس طرف روانہ کیا، راستہ اس طرف جانے کا اسی جگہ سے تھا جہاں عبد اللہ کی رہائش
تھی، سفیح جب وہاں پہنچا تو دور سے غبار نظر آیا، سمجھا کہ غنیم کی فوج آگئی، اس نے فوج
کو مستعد ہونے کا حکم دیدیا، لیکن جب غبار سے صرف دس سوار نکلے تو اس کے دریافت کرنے
پر معلوم ہوا کہ عبد اللہ اشتر شکار کے لئے نکلے ہیں، اور تفریح کے لئے دریا کنارے جا رہے ہیں
اس نے حکم دیا کہ ان کو گرفتار کر لیا جائے، گو چند لوگوں نے اس کو منع کیا اور کہا کہ خاندان
نبوت کے کسی شخص کا خون بہانا درست نہیں، اور اسی سبب تمہارے بھائی ہشام خلیفہ کے احکام کی تعمیل نہیں کر رہے
مگر سفیح نے جواب دیا کہ میں ان کو ضرور گرفتار کروں گا، اور جو بھی مزاحم ہوگا اس کو بھی گرفتار کروں گا،

---

[1] بلاذری نے فتوح البلدان میں لکھا ہے کہ ہشام پہنچا، پھر عمر بن حفص اس کے بعد داؤد سندھ کا
والی ہوا، اور اسی کی پیروی بعض مصنفوں نے کی ہے، چنانچہ ایلیٹ صاحب نے بھی یہی لکھا ہے، لیکن یہ کسی
طرح صحیح نہیں ہے، کامل ابن اثیر میں ہے کہ عمر کا تقرر ۱۵۱ھ میں ہوا، اور ہشام اس کی جگہ سندھ
کا والی مقرر کیا گیا، اور واقعات کی ترتیب بھی اسی کی مؤید ہے، یعقوبی ترتیب تقرر میں ابن اثیر کا مؤید
ہے مگر عمر بن حفص دو ہی سال کے بعد سندھ سے چلا گیا، ۱۵۳ھ میں اس کا معزول ہونا لکھا ہے،

عبداللہ کی شہادت

عبداللہ نے جب دیکھا کہ اب جان بچتی نظر نہیں آتی ہے، تو جنگ کے لئے تیار ہو گئے، اور بڑی بہادری سے جنگ کرتے رہے، یہاں تک کہ ایک ایک کر کے ان کے ساتھی سب مارے گئے، اور خود بھی دو ساتھیوں کے بیچ میں گر کر آخرت کی راہ لی، ان کی لاش مقتولوں میں کچھ اس طرح مشتبہ ہو گئی کہ معلوم نہ کی جا سکی، اور ایک روایت یہ بھی ہے کہ دریائے سندھ میں ان کے طرفداروں نے ان کی لاش کو اس لئے ڈال دیا کہ ان کا سر کاٹ کر خلیفہ کے پاس لوگ نہ بھیج سکیں،

سفیح نے اس کی خبر ہشام کو دی جس کو سن کر یقیناً اس کو بہت افسوس ہوا ہوگا گو چونکہ خلیفہ کے حکم کی اس کے بھائی نے تعمیل کی تھی، اس لئے بظاہر اس سے کوئی مواخذہ نہ کیا، ہشام نے اس کی خبر خلیفہ کو دی جس سے منصور بہت خوش ہوا، اور راجہ پر حملہ کرنے کی تاکید کی،

منصور کا اصل منشا تو حاصل ہو چکا تھا، اس لئے راجہ پر حملہ کرنا غیر ضروری نظر آتا ہے مگر غور کرنے سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ عبداللہ الاشتر کے چار سو جان نثار راجہ کے پاس پناہ گزین تھے، اور ان کا لڑکا محمد مع اپنی والدہ کے ان کے ساتھ تھا، اس لئے منصور کو یہ خدشہ تھا کہ سیاسی اغراض کے لئے محمد کو ان کا جانشین بنا کر لوگ فساد نہ برپا کریں، اور راجہ ان چار سو سپاہی مجرموں کو جو اس کی پناہ میں تھے خلیفہ کے حوالہ کرنا اپنی ذلت سمجھتا، اس لئے دونوں کے لئے سوائے جنگ کے کوئی چارہ نہ تھا،

ہشام نے آخر ۱۵۱ھ میں راجہ پر حملہ کر ہی دیا، دونوں کی خوب جنگ ہوئی، آخر راجہ مارا گیا، اور اس کا ملک مسلمانوں کے قبضہ میں آیا، عبداللہ کے ساتھی یا تو مارے گئے یا ملک میں ادھر ادھر منتشر ہو گئے، عبداللہ کے لڑکے محمد اور ان کی ماں جو لونڈیوں میں سے تھیں

ان سب کو خلیفہ کے پاس بھیج دیا گیا، اور وہاں سے منصور نے اہل بیت کے پاس مدینہ منتقل کر دیا، اور حاکم مدینہ کو حکم دیا کہ مشتہر کر دو کہ یہ لڑکا صحیح النسب سید ہے[1]،

بھاڑبھوت پر بحری حملہ

جب ہشام ان جھگڑوں سے فارغ ہوا تو اس کو توسیع مملکت کا خیال ہوا، اس نے عمرو بن جمل جیسے بہادر کو افسر بنا کر ایک بیڑا کشتیوں کا دیا، جو بھڑوچ کے قریب بھاڑبھوت بندرگاہ میں جا پہنچا، یہ غالباً حالات دریافت کرنے آیا تھا[2]،

ہشام تغلبی منصورہ میں تھا، کہ اس کے کسی مصاحب نے مشورہ دیا کہ منصورہ تمہارے جیسے اولوالعزم افسروں کے لئے کافی نہیں ہے، تم کو تو ملتان جانا چاہئے جہاں سے ہر طرف ہندوستان پر حملہ آور ہو سکتے ہو، یہ بات ہشام کے دل میں اتر گئی، اور فوجی تیاری کر کے ملتان کی طرف چل پڑا اور منصورہ پر اپنے بھائی بسطام کو نائب بنایا، یہ ہندوستان کی حد میں شمال کی طرف بڑھا، یہاں تک کہ کشمیر کی حد میں جا پہنچا، (اس زمانہ میں پنجاب کا بالائی حصہ کشمیر میں داخل تھا) اس نے اس پر حملہ کر کے اپنے مقبوضات میں شامل کیا، اور بڑی تعداد میں قیدی گرفتار ہوئے، اور لوٹ کا مال بے شمار ملا،

ہشام وہاں سے واپس آ کر ملتان پہنچا، یہاں کے لوگ باغی ہو گئے تھے، اور خود حاکم بن بیٹھے تھے، جب ہشام وہاں کے قریب پہنچا تو وہاں کا حاکم بھی فوج لے کر نکلا، تاکہ ان کو کسی صورت سے واپس کر دے، مگر اس میں کامیابی نہیں ہوئی، اور آخر دونوں میں سخت جنگ ہوئی

---

[1] الکامل جلد پنجم ص۲۱۰ [2] فتوح البلدان ص۴۳۱ [3] ایضاً میرے خیال میں ملتان کے لوگ محمد بن قاسم کے بعد سنہ ۱۱۰ھ میں ہی خود مختار ہو گئے تھے، اور چونکہ برہمن آباد بھی سے سنگھ دوبارہ قابض ہو گیا تھا، اس لئے ملتان پر کشمکش ہوتی رہی، اور اسی لئے تاریخ میں ہشام سے پہلے اس کا کوئی ذکر نہیں آتا ہے، اور معلوم ہوتا ہے کہ ہشام سے شکست کھانے کے بعد ان لوگوں نے صلح کر لی، کیونکہ اس کے بعد پھر کسی مورخ نے اس کا ذکر نہیں کیا، جس سے یہ خیال پیدا ہوتا ہے کہ وہ ایک پاسدار علاقہ جس کو سندھ کے والی سے کوئی تعلق نہ تھا،

جو ملتان والوں کی شکست پر جاکر ختم ہوئی، ہشام شہر میں داخل ہوا، اور بہت قیدی پکڑے گئے۔

قندابیل (گنداوا) ہمیشہ سندھ کے تابع رہا، مگر جب خانہ جنگی کے باعث سندھ کی مرکزی طاقت کمزور ہو گئی تھی، تو قندابیل کا حاکم خود مختار بن بیٹھا تھا، اس لئے اب اس کی تنبیہ ضروری سمجھی گئی، چنانچہ ہشام بن عمرو تغلبی ملتان سے سیدھا ہو کر قندابیل آیا، اور حاکم کو جبراً وہاں سے نکال دیا، اور حسب خواہش پختہ انتظام کرکے واپس ہوا۔

گندھار پر بحری حملہ

غالباً عمرو بن جمل اس عرصہ میں واپس آگیا تھا، اور اس سے تمام حالات معلوم کرکے اس لئے ہشام نے جہازوں کے بندوبست کا حکم دیا جب مکمل اہتمام ہو گیا تو ان کو دریائے سندھ کے بہاؤ پر ڈال دیا، جو وہاں سے چل کر بحر عرب میں آئے، اور پھر عرب ضلع بھروچ کے بندرگاہ، گندھار پر حملہ آور ہوئے۱؎۔

اس حملہ کا سبب کیا ہوا؟ میری نظر سے اب تک کسی تاریخ میں نہیں گذرا، لیکن عرب سیاحوں کے سفرناموں سے معلوم ہوتا ہے کہ اس عہد میں سومناتھ، کچھ، کنبھایت، بھروچ، چیمور سوپارہ وغیرہ بڑے بندرگاہ تھے، اور بکثرت عرب تاجر آتے جاتے تھے، جب کبھی یہ تاجر لٹ جاتے یا ان کے ساتھ بدسلوکی ہوتی تو دربار خلافت میں اس کی فریاد کی جاتی، اس وقت کبھی براہ راست مرکزی حکومت ایک بیڑا جہازوں کا ان کی مدد کے لئے بھیجتی، اور کبھی سندھ کے حاکم کو اس طرف توجہ دلائی جاتی جس کو وہ خود انجام دیتا، میرا خیال ہے کہ اس وقت بھی یہی معاملہ پیش آیا، کیونکہ گجراتی تاریخوں سے معلوم ہوتا ہے کہ بھروچ گوجر راجہ کی سلطنت ختم ہو چکی تھی، اور خاندان راشٹر کوٹ نے ان کو مار کر راجہ چیلہ میں پناہ لینے پر مجبور کر دیا، اس انقلاب سلطنت کے وقت بھروچ میں جب فاتح قوم داخل ہوئی ہوگی، اور لوٹ مچی

۱؎ فتوح البلدان ص۴۴۶ لیدن۔

قرین ممکن ہے کہ اس بدامنی کے وقت عرب تاجر بھی لٹ گئے ہوں، اور انہی کی مدد اور حمایت کے لئے یہ فوجی مہم روانہ کی گئی ہو، جیسا کہ ابھی چند سال ہوئے تمام یورپین حکومتوں نے چین میں انقلاب سلطنت کے وقت جنگی بیڑے اپنے تاجروں کی حفاظت کے لئے روانہ کئے تھے، اور چونکہ فاتح قوم کو عربوں سے کبھی واسطہ نہیں پڑا تھا، اس لئے فاتحانہ غرور میں انھوں نے عربوں کے شرائط قبول کرنے سے انکار کر دیا ہوگا، اور اسی پر جنگ ہو گئی ہوگی۔

جب ہشام نے ان کو شکست دے کر گندھار بندر پر قبضہ کر لیا، اس وقت عربوں کا فوجی تفوق اور بحری قوت کا اندازہ لگا کر راشٹر کوٹ والوں نے صلح کر لی ہوگی، کیونکہ اس کے بعد مدت تک ہم دیکھتے ہیں کہ عربوں نے پھر ادھر کا رخ نہیں کیا۔

ہشام نے گندھار پر قبضہ کر کے وہاں اس وقت تک قیام کیا جب تک معاملات باقاعدہ نہ ہو گئے، اس درمیان میں وہاں ایک بتخانہ (دہار) بودھوں کا تھا جس پر قبضہ کر لیا، اور اسے توڑ کر وہاں ایک مسجد تعمیر کی، اور غالباً یہ پہلی مسجد ہے جو گجرات میں تعمیر ہوئی۔

ہشام تغلبی بڑی کامیابی کے ساتھ واپس آیا، اور مدت تک منصورہ میں مقیم رہ کر انتظام سلطنت میں مصروف رہا، اس کے عہد میں بڑا امن وامان اور خوشحالی رہی، یہاں تک کہ لوگ اس کے نام کو بابرکت خیال کرنے لگے، اور اس کا نام سن کر لوگ دور دور سے اس کے پاس آتے اور فیضیاب ہوتے، چنانچہ عرب کا مشہور شاعر مطیع بن ایاس بھی اس کے پاس آیا تھا۱؎ اس کی انتظامی قابلیت کی سب سے بڑی دلیل یہ ہے کہ منصور نے جب اس کا انتظام دیکھا تو اس قدر خوش ہوا کہ صوبہ کرمان بھی اس کے سپرد کر دیا۲؎، اور ۱۵۶ھ میں اس نے دونوں صوبوں کو اس خوبی سے منظم کر دیا کہ جب تک یہ سندھ میں مقیم رہا، نہ تو کبھی کوئی بدامنی ہوئی، اور نہ کوئی

۱؎ اغانی جلد ۱۲ ص۹۶ مصر ۲؎ الکامل جلد ۶ ص۲۰۔

جو ملتان والوں کی شکست پر جا کر ختم ہوئی، ہشام شہر میں داخل ہوا، اور بہت قیدی پکڑے گئے،
قندابیل (گندھاوی) ہمیشہ سندھ کے تابع رہا، مگر جب خانہ جنگی کے باعث سندھ کی مرکزی طاقت کمزور ہو گئی تھی، تو قندابیل کا حاکم خود مختار بن بیٹھا تھا، اس لئے اب اس کی تنبیہ ضروری سمجھی گئی، چنانچہ ہشام بن عمر تغلبی ملتان سے میا پار ہو کر قندابیل آیا، اور حاکم کو جبراً وہاں سے نکال دیا، اور حسب خواہش پختہ انتظام کر کے واپس ہوا۔

گندھار پر بحری حملہ

غالباً عمر بن جمل اس عرصہ میں واپس آگیا تھا، اور اس سے تمام حالات معلوم کر کے اس لئے ہشام نے جہازوں کے بندوبست کا حکم دیا جب مکمل اہتمام ہو گیا تو ان کو دریائے سندھ کے بہاؤ پر ڈال دیا، جو وہاں سے چل کر بحر عرب میں آئے، اور پھر یہ عرب ضلع بھروچ کے بندرگاہ "گندھار" پر حملہ آور ہوئے[1]،

اس حملہ کا سبب کیا ہوا؟ میری نظر سے اب تک کسی تاریخ میں نہیں گذرا، لیکن عرب سیاحوں کے سفرناموں سے معلوم ہوتا ہے کہ اس عہد میں سومنات، کچھ، کنبھایت، بھروچ، چیمور، سوپارہ وغیرہ بڑے بندرگاہ تھے، اور بکثرت عرب تاجر آتے جاتے تھے، جب کبھی ان تاجروں کے یا ان کے ساتھ بدسلوکی ہوتی تو دربار خلافت میں اس کی فریاد کی جاتی، اس وقت کبھی براہ راست مرکزی حکومت ایک بیڑا جہازوں کا ان کی مدد کے لئے بھیجتی، اور کبھی سندھ کے حاکم کو اس طرف توجہ دلائی جاتی جس کو وہ خود انجام دیتا، میرا خیال ہے کہ اس وقت بھی یہی معاملہ پیش آیا، کیونکہ گجراتی تاریخوں سے معلوم ہوتا ہے کہ بھروچ گرجر راجہ کی سلطنت ختم ہو چکی تھی، اور خاندان راشٹرکوٹ نے ان کو مار کر راجہ چیلہ میں پناہ لینے پر مجبور کر دیا، اس انقلاب سلطنت کے وقت بھروچ میں جب فاتح قوم داخل ہوئی ہوگی، اور لوٹ مچی ہوگی

[1] فتوح البلدان ص۴۴۶ لیدن،

تو بہت ممکن ہے کہ اس بدامنی کے وقت عرب تاجر بھی لٹ گئے ہوں، اور انہی کی مدد اور حمایت کے لئے یہ فوجی مہم روانہ کی گئی ہو، جیسا کہ ابھی چند سال ہوئے تمام یورپین حکومتوں نے چین کے انقلاب سلطنت کے وقت جنگی بیڑے اپنے تاجروں کی حفاظت کے لئے روانہ کئے تھے، اور چونکہ فاتح قوم کو عربوں سے کبھی واسطہ نہیں پڑا تھا، اس لئے ناتجربہ کاری میں انہوں نے عربوں کی شرائط قبول کرنے سے انکار کر دیا ہوگا، اور اسی پر جنگ ہو گئی ہوگی۔

جب ہشام نے ان کو شکست دے کر گندھار بندر پر قبضہ کر لیا، اس وقت عربوں کا فوجی تفوق اور بحری قوت کا اندازہ لگا کر راشٹرکوٹ والوں نے صلح کر لی ہوگی کیونکہ اس کے بعد عرصہ تک ہم دیکھتے ہیں کہ عربوں نے پھر ادھر کا رخ نہیں کیا۔

ہشام نے گندھار پر قبضہ کر کے وہاں اس وقت تک قیام کیا جب تک معاملات باقاعدہ نہ ہو گئے، اس درمیان میں وہاں ایک بتخانہ (دہار) بودھوں کا تھا جس پر قبضہ کر لیا، اور اسے توڑ کر وہاں ایک مسجد تعمیر کی، اور غالباً یہ پہلی مسجد ہے جو گجرات میں تعمیر ہوئی،

ہشام تغلبی بڑی کامیابی کے ساتھ واپس آیا، اور عرصہ تک منصورہ میں مقیم رہ کر انتظام سلطنت میں مصروف رہا، اس کے عہد میں بڑا امن وامان اور خوشحالی رہی، یہاں تک کہ لوگ اس کے نام کو بابرکت خیال کرنے لگے، اور اس کا نام سن کر لوگ دور دور سے اس کے پاس آتے اور فیضیاب ہوتے، چنانچہ عرب کا مشہور شاعر مطیع بن ایاس بھی اس کے پاس آیا تھا[1] اس کی انتظامی قابلیت کی سب سے بڑی دلیل یہ ہے کہ منصور نے جب اس کا انتظام دیکھا تو اس قدر خوش ہوا کہ صوبہ کرمان بھی اس کے سپرد کر دیا، اور ۱۵۶ھ میں اس نے دونوں صوبوں کو اس خوبی سے منظم کر دیا کہ جب تک یہ سندھ میں مقیم رہا، نہ تو کبھی کوئی بدامنی ہوئی، اور نہ کوئی

[1] اغانی جلد ۱۲ صفحہ ۹۷ مصر، الکامل جلد ۶ صفحہ ۲،